● सुनो और समझो :

६. मेरा अहोभाग्य

– चंद्रगुप्त विद्यालंकार

जन्म : १९०६ **रचनाएँ :** 'संदेह', 'मेरा बचपन', 'न्याय की रात', 'मेरा मास्टर साहेब', 'चंद्रकला', 'पगली', 'तीन दिन', 'भय का राज्य', 'देव और मानव' आदि । **परिचय :** आपने साहित्य एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है ।

प्रस्तुत पाठ में लेखक ने गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर जी से हुई भेंट से संबंधित संस्मरण बताया है ।

नाम तुम्हारे

* चित्र देखकर उचित सर्वनाम ◯ में लिखो : (तू, मैं, वह, यह, क्या, जैसा-वैसा, अपने-आप)

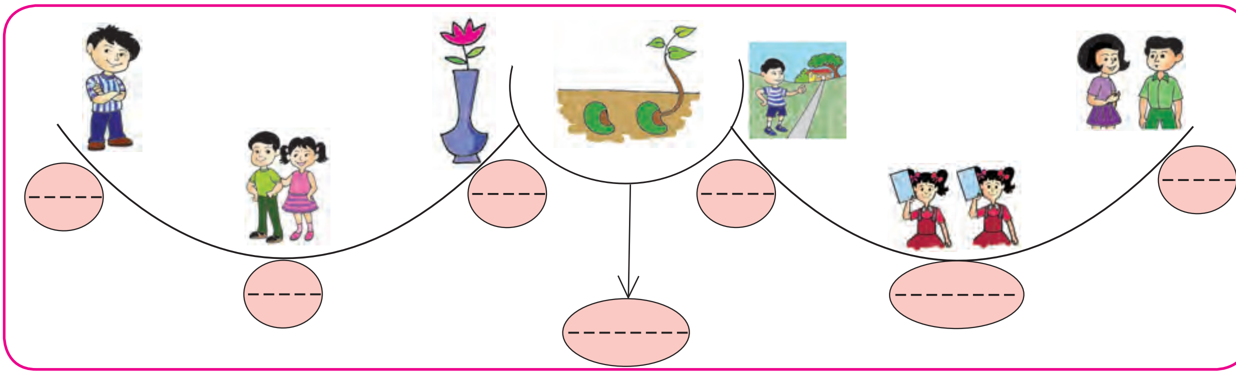

फरवरी १९३६ में मुझे शांति निकेतन जाना था। वहाँ एक साहित्यिक कार्यक्रम होने वाला था । मैं बहुत ही उल्लसित था क्योंकि उस कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वयं गुरुदेव रवींद्रनाथ जी करने वाले थे ।

निश्चित दिन कोलकाता से हम बहुत सारे लोग शांति निकेतन के लिए रवाना हुए । लगभग एक दर्जन हिंदीवालों का यह दल शांति निकेतन के सुंदर अतिथि-भवन में ठहराया गया । यह अतिथि भवन अशोक वृक्षों

के सघन उपवन के बीचोबीच बनाया गया था । बहुत ही सुंदर, बड़ी और अच्छी इमारत थी वह ! जैसा सोचा था वैसा ही पाया । ऊपर की मंजिल के एक कमरे में हमें ठहराया गया । कमरे के बाहर एक विस्तृत बरामदा था । बरामदे में खड़े होकर अगर बाहर देखा जाए तो सामने ही सघन बकुल वृक्ष दिखाई देते थे ।

दूसरे दिन प्रात:काल ही हमें बताया गया कि गुरुदेव का स्वास्थ्य ठीक नहीं है, अत: कार्यक्रम की बैठक में वे नहीं आ पाएँगे । मैं बहुत निराश हो गया तथापि हमें जब यह मालूम पड़ा कि उनके डॉक्टर ने हम लोगों को केवल पंद्रह मिनटों का समय दिया है, जिसमें गुरुदेव के दर्शन तथा उनके साथ संक्षिप्त वार्तालाप भी हो सकता है तब हमारी खुशी का ठिकाना न रहा । हम बेसब्री से उस क्षण का इंतजार करने लगे ।

मध्याह्न के बाद गुरुदेव की भेंट हुई । करीब चार बजे होंगे । गुरुदेव की धारणा थी कि कुछ दो-तीन आदमी ही होंगे । पर जब उन्होंने हम चौदह जनों को

❑ संस्मरण में आए सर्वनाम शब्दों को (मैं, वह, कुछ, जैसा-वैसा, अपने-आप) श्यामपट्ट पर लिखें । इनके भेदों को प्रयोग द्वारा समझाएँ और अन्य शब्द कहलाएँ । विद्यार्थियों से कृति करवाने के पश्चात उनका वाक्यों में प्रयोग करवाकर दृढ़ीकरण कराएँ ।

देखा तो मजाक में उन्होंने कहा, ''अब मेरी क्षमता दरबार लगाने की नहीं रही । इस मकान में जगह की भी कमी है ।'' फिर हम सबको गुरुदेव से परिचय कराया गया । बाद में वार्तालाप शुरू हुआ ।

चर्चा के दौरान गुरुदेव ने कहा, ''अब से पचास बरस पहले जब मैंने कहानियाँ लिखना शुरू किया था तो इस क्षेत्र में एक आध ही आदमी था । मेरी प्रारंभिक कहानियों में ग्रामीण जीवन के संसर्ग का ही वर्णन है । उसके पहले इस तरह की कोई चीज बांग्ला भाषा में नहीं थी । मेरी कहानियों में ग्रामीण जनता की मनोवृत्ति के दर्शन होते थे । उन कहानियों में कुछ ऐसी चीज है जो संसार के किसी भी देश के आदमी को भा सकती है क्योंकि मनुष्य स्वभाव तो दुनिया में हर जगह एक-सा ही है ।''

गुरुदेव कुछ समय के लिए रुके तभी अपने आप मेरे मुँह से निकल पड़ा, ''गुरुदेव आपके मन में 'काबुलीवाला' इस कहानी का विचार कैसे आया ? यह लोकप्रिय कहानी देश के सभी भाषाओं के सभी बच्चों को बहुत ही प्यारी लगती है ।''

गुरुदेव बोले, ''वह कहानी कल्पना की सृष्टि है । एक काबुलीवाला था, वह हमारे यहाँ आता था और हम सब उससे बहुत परिचित हो गए थे । मैंने सोचा, उसकी भी एक छोटी लड़की होगी और जिसकी वह याद किया करता होगा ।''

इसी तरह वार्तालाप होता रहा । हम सबके लिए यह एक मानसिक खाद्‌य था । आश्चर्य की बात यह कि पंद्रह मिनट के बजाय चालीस मिनट हो चुके थे। अब गुरुदेव उठे, चल पड़ें । जाते-जाते उन्होंने कहा, '' जब मैं ऐसे किसी वार्तालाप के लिए कम समय देता हूँ तब मेरी वह बात सचमुच ठीक न मानिएगा क्योंकि मुझे स्वयं लोगों से बातचीत करने में आनंद आता है ।''

हम सबने गुरुदेव को धन्यवाद दिया और विदा ली। मैं अतिथि गृह के मेरे कमरे में वापस आया । गुरुदेव के साथ हुए वार्तालाप से मुझे एक असाधारण उल्लास की अनुभूति हो रही थी । पर जब मुझे पता चला कि जिस कमरे में मुझे ठहराया गया था, उसी कमरे में स्वयं गुरुदेव काफी समय तक रह चुके थे तब

❑ पाठ पढ़कर सुनाएँ और दोहरवाएँ । विद्‌यार्थियों को अपना कोई संस्मरण सुनाने के लिए कहें । उन्हें नए शब्दों से परिचित कराकर अर्थ समझाएँ और इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कराएँ । उनसे गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर जी की रचनाएँ पूछें और उनपर चर्चा करें ।

जरा सोचो .... बताओ

यदि मैं पुस्तक होता/होती तो ......

तो मेरी खुशियों का ठिकाना न रहा । ओहो ! मुझे तो यह भी बताया गया कि गुरुदेव ने 'गीतांजली' का अधिकांश भाग इसी कमरे के बरामदे में बैठकर लिखा था । मैं सचमुच भाव विभोर हो उठा । क्या यह सच है ? मेरा अहोभाग्य था कि मैं उसी कमरे में ठहरा था जिसमें नोबल पुरस्कार प्राप्त 'गीतांजली' रची गई थी ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

संस्मरण = स्मरणीय घटना

मध्याह्न = दोपहर

उल्लसित = आनंदित

वार्तालाप = बातचीत

दल = समूह

संसर्ग = संगति

सृष्टि = संसार

सघन = घना

अनुभूति = स्व-अनुभव

उपवन = उद्यान

बकुल = मौलसिरी (वृक्ष का नाम)

मानसिक खाद्य = वैचारिक चर्चा

भाषा की ओर

निम्नलिखित शब्दों के लिंग और वचन बदलकर लिखो ।

स्त्रीलिंग		पुल्लिंग	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
भैंस	भैंसें	भैंसा	भैंसे
-----	-----	बिलाव	-----
घोड़ी	-----	-----	-----
-----	-----	-----	नाग
-----	चुहियाँ	-----	-----

सुनो तो जरा

दैनिक समाचार सुनो और मुख्य समाचार को फलक पर लिखकर परिपाठ में सुनाओ ।

बताओ तो सही

अपने मनपसंद व्यक्ति का साक्षात्कार लेने हेतु कोई पाँच प्रश्न बनाकर बताओ ।

वाचन जगत से

संत तुकाराम के अभंग पढ़ो और गाओ ।

मेरी कलम से

अपने परिवार से संबंधित कोई संस्मरण लिखो ।

✻ एक वाक्य में उत्तर लिखो :

१. साहित्यिक कार्यक्रम कहाँ होने वाला था ?

२. गुरुदेव की कहानियों में किसकी मनोवृत्ति के दर्शन होते थे ?

३. संस्मरण में किस कहानी का उल्लेख किया गया है ?

४. लेखक आनंद विभोर क्यों हुए ?

स्वयं अध्ययन

महान विभूतियों की सूची बनाकर उनके कार्यों का उल्लेख करते हुए निबंध लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो

उल्लेखनीय कार्य ही व्यक्ति को महान बनाते हैं ।

KK5BH2

विचार मंथन

।। हे विश्वचि माझे घर ।।

खोजबीन

देखें (www.nobel.award)

✻ नीचे दिए गए नोबल पुरस्कार प्राप्त विभूतियों के चित्र चिपकाओ । उन्हें यह पुरस्कार किसलिए प्राप्त हुआ है, बताओ ।

१. गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर	२. सर चंद्रशेखर वेंकटरमन	३. डॉ. हरगोबिंद खुराना	४. मदर टेरेसा
५. सुब्रह्मण्यम चंद्रशेखर	६. अमर्त्यकुमार सेन	७. वेंकटरमन रामकृष्णन	८. कैलास सत्यार्थी